IF : 4.547 | IC Value 80.26 VOLUME-6, ISSUE-7, JULY-2017 • ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper Education

समस्यात्मक बालकों की समस्याएँ व समाधान

डॉ. विष्णु कुमार सहायक आचाय शिक्षा विभाग जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूँ

विद्यालयों में बहुधा ऐसे बालक देखने को मिल जाते हैं जो अपेक्षित सामान्य व्यवहार नहीं करते और इस प्रकार किसी न किसी समस्या के जनक होते हैं। कोई बालक घर से स्कूल जाता है और पार्क में ही बैठ जाता है, कोई स्कूल पहुंचता है पर कुछ देर बाद भाग जाता है, कोई दूसरों की वस्तुएँ व पैसे चुरा लेता है, झूठ बोलता है, गालियाँ बकता है या अक्सर सबसे लड़ता–झगड़ता रहता है, कोई बालक गृह–कार्य नहीं करके लाता है तो कोई विद्रोही, अनुशासनहीन या उदासीन हो जाता है। अपने इन व्यावहारिक विचलनों के कारण ये बालक अध्यापकों, स्कूल–व्यवस्थापकों व माता–पिता सभी के समक्ष कोई न कोई समस्या खड़ी करते रहते हैं, सभी क्षेत्रों में उपलब्धि में पिछड़ जाते है तथा समाज में समायोजित नहीं हो पाते। कुसमायोजित तथा असामान्य व्यवहार के कारण ये समस्यात्मक बालक कहलाते हैं।

समस्यात्मक बालकों का वर्गीकरण : (Classification of problematic children)

1. व्यक्तिगत समस्या वाले बालक :

- अत्यधिक संकोच करना
- हकलाना व तुतलाना
- स्कूल न जाना या स्कूल से भाग जाना
- निराशा की भावना से ग्रसित रहना
- कक्षा में चुपचाप बैठे रहना
- भयभीत रहना
- अंगूठा चूसना
- बीमार रहना
- चिन्तित रहना
- दिवास्वप्न देखना

2 सामाजिक समस्या वाले बालक :

- असभ्यता से बात करना
- गालियाँ देना/लड़ाई–झगड़ा करना
- चोरी करना
- बेईमानी करना
- तोड़फोड़ करना
- समाज के नियम भंग करना
- विद्यालय के कार्य न करना
- झूठ बोलना
- क्रोधित होना आदि।

3. विशिष्ट समस्याओं वाले बालक :

- अंधता
- गूंगापन
- न्यून दृष्टि
- हीनता मनोग्रन्थि से ग्रस्त
- बहरापन
- कम सुनना
- बीमार रहना
- मानसिक बाधिता
- वंचन आदि।

समस्यात्मक व्यवहार के कारण (Causes Underlying problematic behaviour) :

1. आनुवांशिक कारण ;भ्मतमकपजंतल ब्नेमेद्ध वंशानुक्रम के द्वारा अनेक बीमारियों तथा अक्षमताओं से ग्रसित बालक अपेक्षित व्यवहार करने में अक्षम होते हैं। अतः अपनी हीनता या अक्षमता की पूर्ति ;बवउचमदेंजपवदद्ध करने की दृष्टि से ये आसान किन्तु अनैतिक कार्यों की तरफ झुक जाते हैं और सभी सम्बन्धित व्यक्तियों के लिए समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। जैसे– बुद्धि दुर्बलताएँ, ग्रन्थि विकार, लिंगीय विषमताएँ तथा विरासत में मिले दुर्व्यसन आदि।

2. शारीरिक कारण (Physical Causes) अनेक प्रकार की शारीरिक दुर्बलताएँ तथा निर्योग्यताएँ बालक को सामान्य व्यवहार करने में अक्षम बनाती हैं। इनके कारण ही वह सामान्य बालकों के समान प्रगति नहीं कर पाता है और जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए या तो अमान्य ;नदंचचतवअमकद्ध तथा अनैतिक तरीकों को अपनाता है या फिर अन्तर्मुखी बन जाता है जिसके फलस्वरूप उसका व्यक्तित्व कुण्ठित हो जाता है। इन अनेक शारीरिक कारणों में मुख्य हैं– बहरापन, अन्धापन, गूंगापन, कम दिखाई देना, ऊँचा सुनना, अपंगता, शारीरिक कमजोरी, बीमारी आदि। इन्हीं कारणों से वह अपना विद्यालय तथा घर का कार्य अन्य बालकों के समान गति व कुशलता से नहीं कर पाता है, उनके साथ वैमनस्य मानने लगता है, उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता है, पलायन करता है तथा अपनी ऊर्जा को अनेक दुर्व्यसनों में व्यय करता है और कुसंगति अपनाता है।

3. स्वभाव समबन्धी तथा संवेगात्मक कारण (Temperamental and Emotional Causes) कुछ बालक अत्यायु से ही उचित मनोवैज्ञानिक वातावरण के न मिल पाने पर विभिन्न गलत आदतों तथा उद्वेगों से प्रभावित हो जाते हैं। ऐसा प्रायः उनकी सभी आवश्यकताओं (विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक व संवेगात्मक) की उचित ढंग से पूर्ति न हो पाने के कारण होता है जिसके फलस्वरूप इनमें अंगूठा चूसना, बिस्तर गीला करना, अधिक चिड़चिड़ाना, अधीरता, अस्थिर व असन्तुलित व्यवहार करना आदि समस्यात्मक व्यवहार देखने को मिलते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ बालक स्वाभाविक रूप से अत्यधिक भावुक प्रवृति के होते हैं तथा थोड़ी सी ठेस पहुंचने पर अनेक समस्यात्मक व्यवहारों, जैसे–अलगाव, नैराश्य से प्रभावित हो जाते हैं। अपरिपक्व संवेगों के कारण ये मानसिक तनाव से ग्रसति रहते हैं, अच्छे–बुरे का ज्ञान भूल जाते हैं ओर समाज, शिक्षक व माता–पिता के लिए समस्या बन जाते हैं।

4. सामाजिक तथा परिवेशयी कारण (Social and Environmental Causes) समाज तथा घर का वातावरण निस्सन्देह ही बालक की व्यक्तित्व रचना को प्रभावित करता है। बालक सभी प्रकार की बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, आध्यात्मिक तथा आचरण सम्बन्धी बातें यही पर सीखता है तथा अच्छे फल की प्राप्ति के कार्यों को पुनरावृत्ति के द्वारा अपने स्वभाव और व्यक्तित्व की एक आदत/लक्षण के रूप में अपना लेता है। समाज तथा घर के दूषित तथा विकृत वातावरण में पलने वाला बालक अन्य सामान्य बालकों के समान अपेक्षित तथा सन्तुलित व्यवहार नहीं कर पाता ओर विभिन्न समस्याओं को जन्म देता है।

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति, मनोरंजन के अपर्याप्त साधन, नीरस वातावरण, उचित देख–रेख व निर्देशन का अभाव, लाड़–प्यार की अधिकता या कमी, माता–पिता के मध्य टूटते सम्बन्ध तथा विचारों में भिन्नता, सौतली माँ की क्रूरता, अत्यधिक छोटे व घुटन वाले मकान, बड़े सदस्यों की बुरी आदतें तथा अन्य अनेक ऐसी परिस्थितियाँ है जो बालक को व्यावहारिक रूप से विचलित करने के लिए उत्तरदायी होती हैं। इनके अतिरिक्त विद्यालय का दूषित वातावरण, शिक्षकों में गुटबाजी, शिक्षकों का निम्न स्तर (सभी प्रकार से), शिक्षकों की गलत आदतें, अनुचित व अनैतिक कार्य, अरोचक शिक्षा प्रणाली, भेदभाव, अनुशासनहीनता आदि भी समस्यात्मक व्यवहार के वातावरण सम्बन्धी कारणों में हैं।

समाज में प्रचलित कुरीतियों, पास–पड़ोस का गन्दा वातावरण, कुसंगत जैसे–अश्लील बातें करने वाले, स्कूल से भागने वाले, झूठ बोलने वाले तथा चोरी की आदत वाले साथी आदि भी बालक में विभिन्न आदतों के निर्माण की अवस्था में प्रभावी होकर उसको समस्यात्मक व्यवहार के लिए प्रेरित करते हैं। प्रायः नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में गिरावट तथा बालकों एवं अध्यापकों में नैतिक मूल्यों से युक्त एक आदर्श का अभाव भी इसका कारण हो सकता है।

समस्यात्मक व्यवहार का उपचार ;Treatment of problematic behaviour)

1. परिवार सम्बन्धी उपचार (Treatment Related to Family)

- सभी परिवारीजनों के व्यवहार का स्तर अनुकूल हो।
- अनुशासन तथा नियम सापेक्ष हों।
- माता–पिता का व्यवहार पक्षपात रहित तथा सद्भाव युक्त हो।
- बालक को घर में उचित लाड़–प्यार मिले। किसी भी अवस्था में वह स्वयं को तिरस्कृत न समझे।
- ऐसे बालकों के साथ धीरज तथा प्रेम से काम लिया जाएँ
- मौखिक शिक्षा या उपदेशों के स्थान पर बालक के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किये जाने चाहिएँ
- माता–पिता जिस प्रकार के व्यवहार व सम्मान की बालक से अपेक्षा करते हैं वैसा ही बालक को परिवार में दें।
- बालक की शारीरिक अवस्था पर विशेष ध्यान दें।
- माता–पिता स्वयं अपने जीवन को अनुशासित ध्यान दें।
- माता–पिता से किये गये अपने वायदों को पूरा करें (अन्यथा बालक का उन पर में विश्वास उठ सकता है)।
- माता–पिता की जीवन सम्बन्ध धारणाएँ बहुत दृढ़ हो।
- बालको में अच्छा चरित्र, मधुरवाणी तथा शुभविचार उत्पन्न करने के लिए माता–पिता को चाहिए कि वे स्वयं भी बालक के समक्ष वैसा ही व्यवहार आरम्भ से ही प्रस्तुत करें।
- माता–पिता स्वयं पूर्वाग्रह, मनोग्रन्थियों, द्वन्द्वों व अन्ध विश्वासों से बचें।
- माता–पिता सरल, सादगीपूर्ण व ईमानदारी का जीवन व्यतीत करें।
- बालक के सुधार के लिए सभी परिस्थितियों को समग्रता से देखें व समझने का प्रयास करें।
- बालक के भविष्य की योजना उनकी योग्यताओं व क्षमताओं को ध्यान में रखकर बनाये तथा अत्यधिक ऊँचे लक्ष्य निर्धारित न करें।
- बालक में सुरक्षा की भावना का विकास करें।

2. अच्छी संगति (Good Companionship) बालक जो भी व्यवहार घर तथा विद्यालय में सीखता है, अपने साथियों के साथ विभिन्न क्रिया–कलापों में निष्पादित करता है। इसके अतिरिक्त अपने साथियों से अपनी तुलना करता है ओर अपनी सापेक्षिक कमियों को दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास करता है। यदि इन कमियों की पूर्ति उसको, सामाजिक या नैतिक तरीकों से मिल जाती है तो वह सामान्य बालक के समान ही व्यवहार करता है। लेकिन पूर्ति न होने पर वह उदाहरणार्थ, दूसरे बालक की वस्तु चुरा सकता है, छीन सकता है, अपना प्रभुत्व बनाये रखने के लिए उसकी पिटाई करता है, उसे गाली देता है व चिढ़ाता है। इन परिस्थितियों की पुनरावृत्ति होने पर वह असामान्य व्यवहार उसकी आदत बन जाता है। अतः बालक के समस्यात्मक व्यवहार के उपचार की दृष्टि से आवश्यक है कि माता–पिता व शिक्षक भी इस बात का पूरा ध्यान रखें कि बालक किस

किस स्तर की है।

3. विद्यालयी सम्बन्धी उपचार (Treatment Related to School)

- विद्यालय की शिक्षा प्रणाली रूचिकर हो जिससे बालक विद्यालय में आनन्द का अनुभव कर सके और दुर्व्यसनों में पड़ने से बच जायें।
- विद्यालय के शिक्षकों का चरित्र, व्यक्तित्व तथा व्यवहार अच्छा व प्रभावशाली ;प्उचतमेपअमद्ध हो ताकि बालक अपने लिए उचित आदर्शों का चुनाव कर सकें।
- विद्यालय में स्व–अनुशासन हो।
- विद्यालय के विभिन्न कार्यों में बालकों का यथासम्भव सहयोग लिया जाये जिससे कि वे अपने खाली समय का सदुपयोग कर सकें तथा अपने आपकों विद्यालय का एक उपयोगी अंग समझे।
- विद्यालय में समय–समय पर खेलों, नाटकों तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये।
- विद्यालय में सन्तुलित पाठ्यक्रम हो जो बालकों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करे।
- पाठ्यसहगामी क्रियाएँ–देशाटन, कैम्प, स्काउटिंग, नृत्य, गान, भाषण आदि बालकों को व्यस्त बनाये रख सकते हैं।
- विद्यालय में पुस्तकालय तथा कार्यशाला की उचित व्यवस्था हो जहां, बालकों के चरित्र को उत्तम बनाने तथा ज्ञानवर्धन करने वाली पुस्तकें तथा कार्य आयोजित हों।
- विद्यालय तथा परिवार में समन्वय हो।
- विद्यालय में व्यक्तिगत, शैक्षिक, व्यावसायिक तथा सामाजिक निर्देशन की आवश्यक व्यवस्था हो।
- समस्यात्मक बालकों का (सम्भव हो तो सभी बालकों का) व्यक्ति इतिहास (ऐनेक्डोल रिकॉर्ड्स) व संचयी अभिलेख तैयार किये जाएँ।
- इन अभिलेखों के आधार पर विशेषज्ञों की सलाह से समस्यात्मक बालकों की उपचार योजनाएँ बनाई जाएँ।
- बालक को उसकी गलती का दण्ड तभी दिया जायें जबकि बालक को अपनी उस गलती का अहसास हो जाये।
- बालकों को स्वयं अपनी समस्याओं के हल ढूंढने के लिए अवसर तथा उचित निर्देशन प्रदान किया जाये।
- समस्यात्मक बालक के व्यवहार पर बराबर निगरानी रखी जाये तथा गलती पर प्यार से समझाया जाये।
- बालक के साथ दोषपूर्ण व्यवहार को रोका जाये।
- कठोर शारीरिक दण्ड न दिया जाये।
- बालक की अक्षमताओं या असफलताओं पर उसका मजाक न बनने दिया जाये।
- बालक को पूर्ण सुरक्षा प्रदान की जाये।
- नैतिक, धार्मिक तथा यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिया जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निहोत्री, रवीन्द्र (2008); आधुनिक भारतीय शिक्षा : समस्याएं और समाधान, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
2. भार्गव, महेश (1999); आधुनिक मनोविज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा : हरि प्रसाद भार्गव बुक कम्पनी।
3. बिहारी विश्वनाथ एवं त्रिपाठी नरेशचन्द्र (2008); शिक्षा में नवाचार, आगरा–2 : विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. जीत योगेन्द्र भाई (2008); शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृतियां, आगरा–2 : विनोद पुस्तक मन्दिर।
5. गुप्ता एस.पी., (2006); भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक मंथन।
6. कपिल, एच. के. (1995); अनुसंधान की विधियाँ, आगरा : हरिप्रसाद भार्गव।
7. लवनियां, एम. एम. (1989); भारत में सामाजिक समस्याएं, जयपुर : कॉलेज बुक डिपो।
8. पाण्डेय, रामशकल एवं मिश्र करूणा शंकर (1998); भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
9. पाठक, पी. डी. (1974); भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
10. सिंह, अरूण कुमार (2004); शिक्षा एवं सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान, पटना।
11. शर्मा, आर. ए. (2009); शिक्षा अनुसंधान, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो।
12. शाह, एम. ए. (2009); मनोविज्ञान परीक्षण, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।